नैक (NAAC) द्वारा 'A' ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997 क्रमांक के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

गांधी की अहिंसा,सत्याग्रह मानवजाति को बचाने का रास्ता - प्रो. जी. गोपीनाथन

हिंदी विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय संगोष्ठी में वक्ताओं ने रखे विचार

वर्धा, दि. 22 अगस्त 2019 :महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में 'गांधी और उनकी समसामायिक प्रासंगिकता : समाज, संस्कृति और स्वराज' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय परिसंवाद के तीसरे दिन गुरुवार 22 अगस्त को विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. जी. गोपीनाथन ने

'भूमंडलीकरण और स्वदेशी'विषय पर विचार रखते हुए कहा कि गांधी जी की स्वदेशी की कल्पना आज भी प्रासंगिक है। गांधी ने अहिंसा की खोज कर सत्याग्रह का आविष्कार किया जो आज के परिप्रेक्ष्य में मानवजाति को बचाने का एकमात्र रास्ता दिखता है। गांधीजी ने देशी प्रौद्योगिकी का विकास किया इसे

समझाते हुए उन्होंने कहा कि चरखा, खादी वस्त्र आदि का उपयोग कर भारत को देशी प्रौद्योगिकी के इस्तेमाल का रास्ता दिखाया। गांधीजी ने वर्धा में रहते जैविक खेती, नई तालिम, गोरस भंडार, प्राकृतिक आहार, आयुर्वेद और कुदरती इलाज, पंचभूति का प्रयोग किया और उसका प्रसार भी किया। प्रो.गोपीनाथन ने कहा कि देशी प्रौद्योगिकी का नवीकरण कर उसे भारत और विदेश में प्रचारित करना आज के समय की आवश्यकता है। गांधी और राष्ट्रभाषा के संबंधो का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि गांधी ने वर्धा में राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की स्थापना कर उसका प्रचार-प्रसार मिशनरी तौर पर किया। उधर दक्षिण में दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा की स्थापन कर और विदेश में फीजी सुरिनाम जैसे देशों में उन्होंने हिंदी का बखूबी प्रचार किया। हिंदी को विश्वभाषा के रूप में स्थापित करने की दिशा में गांधीजी का अहम योगदान रहा है। प्रो. गोपीनाथन ने यह विचार भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली एवं महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के संयुक्ततत्वावधान में महात्मा गांधी की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में 20, 21 और 22 अगस्त को 'गांधी और उनकी समसामायिक प्रासंगिकता : समाज, संस्कृति और स्वराज' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय परिसंवाद में व्यक्त किये। गालिब सभागार में आयोजित सत्र की अध्यक्षता गुजरात विश्वविद्यालय अहमदाबाद की प्रो. पुष्पा मोतियानी ने की। इस अवसर पर देवजानी चक्रबोर्ती भी मंचासीन थी।

केरल कालीकट की साहित्यकार प्रो. के. एम. मालती ने 'भारत के स्त्री मुक्ति आंदोलन में महात्मा गांधी की भूमिका' विषय पर अपने विचार रखे। उन्होंने कहा कि गांधीजी ने महिलाओं की शिक्षा के लिए वर्धा में 1912 में कन्या आश्रम तथा मातृसेवा संघ की स्थापना की। वे स्त्री पुरुष-समान अधिकार, अंतरजातीय विवाह के पक्षधर रहे। दहेज प्रथा के कड़े विरोध में रहे और हरिजन परिवार की लक्ष्मी को गोद लेकर महिला मुक्ति की दिशा में उन्होंने महत्वपूर्ण कार्य किया। उनके अनेक सत्याग्रहों में महिलाओं का सहभाग रहा है। शराबबंदी और नशामुक्ति जैसे आंदोलनों को चलाकर उन्होंने महिला मुक्ति और स्त्री स्वतंत्रता के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आज के परिप्रेक्ष्य में उनके विचार प्रासंगिक है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रो. पुष्पा मोतियानी ने ज्वलंत समस्याओं का मुकाबला करने के लिए महिलाओं को जागरूक होकर आगे आना चाहिए। महिलाओं को आगे बढ़ने के लिए चाहिए कि वे आत्मविश्वास के साथ खूद को प्रस्तुत करें। सत्र में देवजानी चक्रबोर्ती ने भी अनेक संदर्भों के साथ गांधी जी और महिलामुक्ति के विषय में अपनी बात रखी। इस अवसर पर सभागार में देशभर से पधारे विद्वतजन,विवि के शोधार्थी एवं विद्यार्थी बड़ी संख्यामें उपस्थित थे।